ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका
Role of Women in Rural Development and Panchayati Raj

Paper Submission: 15/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

अवधेश कुमार झा
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
हे० न० ब० राज०
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
नैनी, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत

ग्रामीण विकास में अनेक वर्गों एवं संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। पंचायती राज व्यवस्था की इसमें सबसे प्रमुख भूमिका रही है। इससे महिलाओं का सामाजिक उत्थान और उनमें राजनैतिक जागरूकता आई है। केंद्र सरकार ने विभिन्न ग्रामीण योजनाओं की शुरुआत की है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में कुरीतियों के प्रति भी जागरूकता आई है। परन्तु अभी भी इनके दशाओं में सुधार की आवश्यकता है।

Many sections and institutions play an important role in rural development. The Panchayati Raj system has played a major role in this. This has brought about social upliftment of women and political awareness among them. The central government has started various rural schemes. This has also brought awareness about the evils in rural areas. But still there is a need to improve their conditions.

मुख्यशब्दः कृषिगत विकास, बहुआयामी गतिविधि, पारदर्शिता, बाज़ार व्यवस्थाएं, मानवीय आयाम, लोकतंत्र, राजनैतिक चेतना, क्रियाहीनता, आत्मनिर्भरता, राजनीतिक जागरूकता, आरक्षण, वृद्धावस्था, मानसिकता, निष्ठा, गाँव, राष्ट्रनिर्माण, भागीदारी, स्वयंसेवी संस्था, छुआछूत, स्थानीय सुशाशन, प्रतिनिधि प्रशिक्षण ।

Keywords: Agricultural development, multidimensional activity, transparency, market systems, human dimension, democracy, political consciousness, non-action, self-reliance, political awareness, reservation, old age, mindset, loyalty, village, nation building, partnership, voluntary organization, untouchability, local good governance, representative training .

प्रस्तावना

ग्रामीण विकास एक बहुआयामी गतिविधि है, जिसमें कृषिगत विकास के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योग-धन्धे, सामाजिक एवं आर्थिक सुविधाएं प्रदान करने हेतु आधारभूत संरचना स्कूल, चिकित्सालय एवं स्वास्थ केन्द्र , सड़कें, संचार साधन, जल आपूर्ति, बाजार व्यवस्थाएं, संबंधित पोषित आहार, साक्षरता आदि सम्मिलित है। ग्रामिण विकास की अवधारणा को देखा जाए तो इसमें उन लोगों के जीवन स्तर में गुणवत्ता में सुधार, जो समाज में गरीब और कमजोर वर्ग से हैं। ग्रामीण विकास को सार्थकता प्रदान करने में पंचायती राज तभी सफल हो सकता है, जब राजनैतिक , सामाजिक , सांस्कृतिक और मानवीय आयामों के साथ विकास की गतिविधियों को आगे बढ़ाया जाए।

ग्रामीण विकास का अर्थ ग्रामीण लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। स्वतंत्रा प्राप्ति के पश्चात ग्रामों का चहुँमुखी विकास तथा लोकतंत्र को गाँवों के स्तर तक पहुँचाने के लिए पंचायत राज के अन्तर्गत विकास के प्रयास प्रारम्भ किये गये। प्रत्येक राज्य ने पंचायत राज व्यवस्तथा को अपने-अपने तरीके से अपनाया तथा ग्रामीण विकास की गतिविधियों और कार्यक्रमों को लागू किया जाने लगा।

पंचायती राज व्यवस्था में पारदर्शिता और जनभागीदारिता को महत्व दिया गया है।इसके साथ ही समाज कल्याण के कार्यक्रमों पर निगरानी रखने का उत्तरदायित्व दिया गया। हमारा देश गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक विषमताओँ के कारण पिछड़ रहा है। इसी उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा ग्रामीण मिशन के अन्तर्गत शिक्षा, स्वास्थ, जल संग्रहण और रोजगार के विभिन्न कार्यक्रमों को पंचायत से जोड़ा गया है। परन्तु साक्षात् व्यवहार में पंचायती राज के समक्ष कुछ प्रमुख समस्याएं है जैसे- जनता में साक्षरता, राजनैतिक चेतना का अभाव, जनता का आलस्य एवं उसकी क्रियाहीनता और जातीय, धार्मिक निष्ठाएं। राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति एवं भागीदारी को सुनिश्चित करना। पंचायती राज के विभिन्न विकास कार्यक्रम ग्रामीणों के हित में किये गये जैसे एकीकृत ग्रामीण विकास का कार्यक्रम ग्रामीण आवासहीनों को निःशुल्क भू- खण्ड, पीएम आवास योजना , प्रधानमंत्री रोजगार योजान, महिला समृद्धि योजना, राष्ट्रीय मेटरनिटी बेनीफीट योजना, राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम,राष्ट्रीय परिवार सहायता योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना आदि विकास कार्य किये गये जिसमें काफी ग्रामीण लाभान्वित भी हुए है।

विकास के मूल में मुख्य भूमिका महिलाओं की होती है चाहे वह ग्रामीण विकास हो या परिवार या समाज का विकास, इसी भावना से पंचायती राज व्यवस्था ने महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देखर एक सराहनीय कदम उठाया गया है। परन्तु अशिक्षा इसके मार्ग में एक बड़ी रूकावट है

पंचायती राज व्यवस्था के द्वारा महिला निति लागू होने के बाद महिलाओं में नई चेतना व जागृति दिखाई देने लगी है। नारी जगत अपने अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक हो गया है तथा महिलाओं ने स्वयं

पहल करके आगे आकर विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक प्रशासनिक जिम्मेदारियों बढ़ी है. समाज और परिवार में उनके अस्तित्व को रेखांकित कर राजनैतिक रूप से सामर्थ्यवान बनाया जा रहा है और राजनैतिक,सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिये उन्हें नये अवसर दिये जा रहे है।

पंचायती राज व्यवस्था के द्वारा ग्रामीण विकास हेतु अनेकानेक योजनाएं चलायी जा रही हैं। जैसे राष्ट्रीय वृद्धावस्था योजना आदि।

पंचायती राज व्यवस्था के द्वारा ग्रामीण विकास की दृष्टि से महिला संगठन और स्वयंसेवी संस्थाओं को महिलाओं के विषय मे कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये गये। सर्वप्रथम महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाये,इसके लिए सामजिक प्रथाओँ एवं परम्पराओं में परिवर्तन की जरूरत है. पुरूष मानसिकता में परिवर्तन की जरूरत महिलाओं को शिक्षित करने का सरकारी प्रावधान हो, स्त्रियों से सम्बन्धित सभी कानूनों की जानकारी दी जाए, महिलाओं को जागरूक बनाया जाए।

यदि उपयुक्त सुझावों को निष्ठापूर्वक क्रियान्वित किया जाए तो निश्चित ही महिलीओं को को पुरूषों के समान सामाजिक न्याय और प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकेगा और समाज में वह एक अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकेगी।

स्त्री पुरूष को वास्तविक समानता पूंजीवादी राजनैतिक व्यवस्था में संभव नहीं है और वह समानता तभी प्राप्त की जा सकती है जब समाज अपने परिवर्तन की प्रक्रिया में समाजवादी ढाँचे को स्वीकार कर ले। किसी भी प्रकार के सामाजिक परिवर्तन लाने में महिलाओं को भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती होती है। जब तक महिलाओं स्वयं जागरूक नहीं होगी तब तक सामाजिक क्रान्ति संभव नहीं है।

पंचायती राज संस्थाओं को सुद्दढ़ करने के पीछे सरकारा की मंशा थी कि गाँव से जिला स्तर तक लोगों को पंचायती राज व्यवस्था जुड़ने पर ग्रामीण क्षेत्र का समुचित विकास होगा और गाँव राष्ट्र की मुख्य विकास धारा से जुड़ सकेगा। पंचायती राज के त्रिस्तरीय ढाँचेकी स्थापना के बाद लोगों में नयी आशा की किरण जगी।

राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के द्वारा पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के एक तिहाई आरक्षण के प्रावधान से देश की महिलाओं को राष्ट्र के मुख्य धारा में सम्मिलित होने का मार्ग खुला है। परन्तु भारत में पितृसत्तात्मक व्यवस्था होने तथा पुरूष प्रधान समाज के कारण महिलाओं की अशिक्षा एवं अज्ञानता के कारण महिला सरपंच एवं प्रधान के पतियों ने खुलेआम उनके स्थान पर कार्य करने एवं महत्वपूर्ण निर्णय लेने का कार्य किया है। इस स्थिति में महिलाओं के बीच आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण कार्यक्रम एवं उचित प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रयास किए जाए।

पूरे भारत वर्ष में पंचायती राज संस्थाओं में 10 लाख से अधिक महिला जनप्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रही है. जो विश्व के किसी भी देश में नहीं है। यदि पूरे विश्य के निर्वाचित प्रतिनिधि की संख्या जोड़ी जाए तो भी वह संख्या इन निर्वाचित भारतीय महिला प्रतिनिधियों से भी कम ही होगी। इसे ग्रामीण भारत ने मौन लोकतांत्रिक क्रान्ति भी कहा जा सकता है।

पंचयती राज व्यवस्था के द्वारा ग्रामीण विकास के लिए महिलाओं के सम्बन्ध में भी कुछ सुझाव दिये गये है जैसे महिलाओं के शिक्षित करने के पुरूषों की मानसिकता मे बदलाव लाया जाया जाये, आत्मनिर्भर बनाया जाये, परमपराओं में परिवर्तन किये जाये, स्त्रयों से सम्बन्धित कानूनों एवं अधिकारों के विषय उनको जानकारी दी जाये, महिलाओं को जागरूक बनाया जाए।

पंचायती राज संस्थाओं ने महिलाओँ की भागीदारी को बढ़ावा देने एवं राजनीतिक निर्णय लेने का अवसर भी प्रदान किया है। पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से उनमें नवीन चेतना की विकास हुआ है। एक अच्छी सुशासित व्यवस्था को स्थापित करने में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त अहम है। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी से ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुद्दढ़ हुई है वही नेतृत्व क्षमता का भी विकास हुआ है जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण भारत में फैली कुरीतियों जैसे-बाल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, छुआछुत आदि में कमी आयी है। पंचायती राज ने अनुसुचित जाति के लिए भी भागीदारी सुनिश्चित हुई है। ग्रामीण भारत में जातिगत भेदभाव में भी कमी आयी है।

अध्ययन का उद्देश्य

पंचायती राज व्यवस्थाओं का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित होना चाहिए:-

1. पंचायती राज का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक न्याय की स्थापना करना।
2. विकास का जो स्थानीय योजनाएं बनायी गयी है उन्हें कार्यान्वित करना।
3. वित्तीय स्थिति को सुधारने में मदद करना।
4. पंचायतों में महिलाय़ों की भागीदारी से स्वस्थ सामाजिक संरचना का निर्माण करना।
5. महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना।
6. पारिवारिक उत्तरदायित्वों को सहज बनाना ।
7. महिलाओं के विकास हेतु समुचित शिक्षा व्यवस्था करना।

8. महिलाएं अपनी बुद्धी, विवेक एवं तर्क के आधार पर प्राचीन रूढ़ियों एवं परम्पराओं का परित्याग कर वैज्ञानिक ढंग से सोचने –समझने का प्रयास करें ताकि विश्व प्रतियोगिता में बराबरी से भाग ले सके।
9. महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता को प्रसारित करना।
10. प्रतिनिधि संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण व्यवस्था करना।

निष्कर्ष

पंचायती राज में महिलाओँ की भागीदारी सुनिश्चित करने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि पंचायती रीज व्यवस्था को अधिक प्रभावी व व्यवहारिक बनाया जाये जिसके कुछ प्रमुख सुझाव दिये जा सकते है पंचायती राज की संस्थाओं को अधिकतम शक्तियां प्रदान की जानी चाहिए।

1. पंचायती राज संस्थाओं में बढ़ते हुए राजनितिक हस्तक्षेप को कम किया जाना चाहिए।
2. योग्य प्रतिनिधि का चुनाव किया जाना चाहिए।
3. पंचायती राज संस्थाओं में भष्टाचार को कम करने के लिए पारदर्शिता का होना भी आवश्यक है।
4. स्थानिय विकास के लिए स्थानिय लोगों की सक्रिय भागीदारी होना भी जरूरी है।
5. पंचायती राज संस्थाओं में सामाजिक रूप से ऑडिट होना चाहिए जिसकी रिपोर्ट सार्वजनिक होनी चाहिए।
6. पंचायती राज संस्थाओं को स्थानिय स्वशासन की इकाई के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए।
7. पंचायती को वित्तिय स्थिति को भी मजबूत किया जाना चाहिए जिससे उचित विकास हो सके।
8. महिला प्रतिनिधियों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों को लागू किया जाना चाहिए।
9. ग्रामीण विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि स्वयंसेवी संस्थाओं से सहयोग स्थापित किया जाये जिससे ग्रामीण का उत्थान हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ० महीपाल-पंचायती राजः चुनौतियां एवं सम्भावना, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.*
2. *डॉ० मधु राठौर- पंचायती राज एवं महिला विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर राजस्थान।*
3. *डॉ० राजनीकांत पाण्डेय –पंचायती राजव्यवस्था में जिला पंचायत अध्यक्ष की भूमिका मंगलम् वर्ष 04(02) भाग, अगस्त2013*
4. *प्रतियोगिता दर्पण, अक्टूबर 2014*
5. *डॉ० मीनाक्षी पवार - पंचायती राज और ग्रामीण विकास*
6. *डॉ० नरेन्द्र श्रीवास्तव - भारत में एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम*